श्राद्ध पक्ष - 26 सितम्बर 2026 से 10 अक्टूबर 2026

पितृदोष मुक्ति - अष्टवसुगण साधना

मनुष्य द्वारा जब अपने पितरों का श्रद्धा पूर्वक पूजा, ध्यान एवं आह्वान समय-समय पर नहीं किया जाता है तो वे रुष्ट हो जाते है और अपनी कृपा अपने वंशजों से हटा लेते है। पितृदेव के आशीर्वाद से वंचित मनुष्यों के जीवन में दुष्ट शक्तियां भूत, प्रेत, डाकिनी, चुण्डेल इत्यादि क्रूर शक्तियां जीवन में प्रवेश कर जाती है और जीवन में संतान स्वास्थ्य बाधा, परिवार में स्वास्थ्य बाधा, कार्य में बाधा, आर्थिक हानि, दुर्घटना और नकारात्मक का प्रवेश हो जाता है।

इन परिस्थितियों के निराकरण हेतु व्यक्ति तांत्रिकों, झाड़-फूंक करने वालों से मिलता है। लेकिन वह उनसे उचित उपाय नहीं प्राप्त कर पाता और वह अनभिज्ञ की भांति अपनी परेशानी को समाप्त करने हेतु एक से दूसरे के पास जाता है तथा व्यय भी करता है, लेकिन हल न मिलने के कारण वह व्यथित हो जाता है।

इसके लिए तो एक ही उपाय शेष बचता है, कि मनुष्य अपने पितरों की कृपा प्राप्त कर अपने ऊपर व्याप्त पितृ दोष से मुक्त होने के लिये अष्टवसुगण साधना सम्पन्न करें।

- इस साधना में आवश्यक सामग्री है - '**अष्टवसु यंत्र**', '**सर्व सिद्धि प्रदायक गुटिका**' तथा '**काली हकीक माला**'
- एक दिवसीय साधना को **किसी भी अमावस्या** अथवा **श्राद्ध पक्ष** (26 सितम्बर 2026 से 10 अक्टूबर 2026) में सम्पन्न किया जा सकता है। **पितृ अमावस्या** (10 अक्टूबर 2026) के अवसर पर इस साधना को सम्पन्न करना विशेष रूप से फलदायी माना गया है।
- साधक पीले वस्त्र पहन कर यह साधना करे।
- एक बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर गुरु चित्र/विग्रह/पादुका/यंत्र को पौंछ कर स्थापित कर अष्टवसुगण पितृ मुक्ति साधना में सफलता हेतु निम्न प्रकार गुरुदेव का पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें।
- गुरु पूजन के पश्चात् गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

गुरु पूजन के पश्चात् मूल साधना-पूजन सम्पन्न करें -

- गुरु चित्र के सामने **एक ताम्र पात्र** में **अष्टवसु यंत्र** स्थापित करें, फिर उसकी दाहिनी ओर पीले चावल की ढेरी बनाकर उस पर गुटिका रखकर यंत्र और गुटिका का पूजन करें।
- अब अष्टवसुओं का आह्वान करें, जो पितरों तक आपके तर्पण भोग और भावना को ले जाते हैं।

ॐ धर वसुगण नमामि
ॐ ध्रुव वसुगण नमामि
ॐ सोम वसुगण नमामि
ॐ अप वसुगण नमामि
ॐ अनिल वसुगण नमामि
ॐ अनल वसुगण नमामि
ॐ प्रत्यूष वसुगण नमामि
ॐ प्रभास वसुगण नमामि

- यंत्र पर पुष्प चढ़ाएं व धूप-दीप दिखायें।
- **काली हकीक माला** से 51 माला मंत्र जप करें -

//ॐ वं वसुभिः वं ॐ नमः //

- श्राद्ध पक्ष के किसी भी दिन यह साधना सम्पन्न करें। अपने पितरेश्वरों को श्रद्धा पूर्वक याद करें। उन्हें जल अर्पण करें। मंत्र साधना पूर्ण होने पर तीन लोटे जल आकाश की ओर मुंह कर तर्पण करना चाहिये।
- मंत्र जप की समाप्ति पर विभिन्न भोज्य पदार्थों, पकवानों से सजी भोजन की थाली का भोग लगायें तथा भोग के पश्चात् स्वयं उस भोजन को ग्रहण करें।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 430/-